

**सर्वहर वि.** (तत्.) सब कुछ हर लेने वाला पुं. काल, यम।

**सर्वहारा वि.** (तत्.) 1. जिसका सब कुछ छिन चुका हो, अत्यंत निर्धन 2. राज. कार्ल मार्क्स के सिद्धांत के अनुसार समाज का दलित या शोषित वर्ग, वह वर्ग जिसके पास कोई चल-अचल संपत्ति न होने के कारण वह अपना शारीरिक श्रम बेचने को बाध्य हो, जो आजीविका के लिए अन्यो पर आश्रित हों विलो. बुर्जुआ।

**सर्वहारी वि.** (तत्.) सब कुछ छीन लेने वाला।

**सर्वहित पुं.** (तत्.) सबका भला, प्राणिमात्र का कल्याण।

**सर्वहिताय क्रि.वि.** (तत्.) सबके कल्याण के लिए।

**सर्वांग पुं.** (तत्.) पूरा शरीर, सभी अंग।

**सर्वांगपूर्ण वि.** (तत्.) सभी दृष्टियों से पूरा।

**सर्वांग सुंदर वि.** (तत्.) 1. जिसका प्रत्येक अंग-प्रत्यंग सुंदर हो, अत्यंत सुंदर 2. जिसमें कोई कमी न हो।

**सर्वांगिक वि.** (तत्.) 1. सभी अंगों में व्याप्त 2. सभी अंगों का। जैसे- सर्वांगिक पीड़ा।

**सर्वांगीण वि.** (तत्.) सभी प्रकार से या सभी दृष्टियों से जैसे- देश का सर्वांगीण विकास।

**सर्वांत पुं.** (तत्.) सब कुछ समाप्त हो जाने की स्थिति, सबका अंत।

**सर्वांतक वि.** (तत्.) सर्वांत कर देने वाला दे. 'सर्वांत'।

**सर्वांतरस्थ वि.** (तत्.) सब के हृदय में स्थित पुं. परमात्मा।

**सर्वांतरात्मा पुं.** (तत्.) परमात्मा।

**सर्वातर्यामी वि.** (तत्.) सबके अंदर स्थित, सबके हृदय की बात जानने वाला पुं. परमात्मा।

**सर्वांत्य वि.** (तत्.) वह पद्य जिसमें चारों चरण के अव्याक्षर एक से हों।

**सर्वाक्ष वि.** (तत्.) सर्वत्र दृष्टि रखने वाला पुं. रुद्राक्ष।

**सर्वाक्षी स्त्री.** (तत्.) एक प्रकार की औषधीय वनस्पति, घास की जाति का एक क्षुप, जिसकी पत्तियाँ बहुत छोटी (गेहूँ के दाने जितनी और लगभग उसी के आकार की) होती हैं और जिन्हें तोड़ने पर दूध जैसा सफेद रस निकलता है।

**सर्वाजित वि.** (तत्.) 1. सब को जीतने वाला 2. जो सब से बढ़-चढ़ कर हो, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम।

**सर्वाजीव वि.** (तत्.) जो सभी को आजीविका प्रदान करे।

**सर्वाणी स्त्री.** (तद्.) पार्वती, रुद्राणी, शर्वाणी।

**सर्वातिथि वि.** (तत्.) जो प्रत्येक का आतिथेय हो, जिसके यहाँ प्रत्येक अतिथि का स्वागत होता हो।

**सर्वात्मवाद पुं.** (तत्.) वह सिद्धांत, जिसके अनुसार सभी में परमात्मा का वास है, अद्वैतवाद।

**सर्वात्मवादी वि.** (तत्.) सर्वात्मवाद के सिद्धांत को मानने वाला, अद्वैतवादी।

**सर्वात्मा पुं.** (तत्.) संपूर्णविश्व की आत्मा, परमेश्वर।

**सर्वाधिक वि.** (तत्.) सबसे अधिक।

**सर्वाधिकार पुं.** (तत्.) 1. सभी प्रकार के अधिकार 2. सब कुछ करने का अधिकार, पूर्णाधिकार।

**सर्वाधिकारी वि.** (तत्.) 1. जिसके पास समस्त अधिकार हों 2. सबसे बड़ा अधिकारी।

**सर्वाधिपति पुं.** (तत्.) सर्वोच्च शासक।

**सर्वाधिपत्य पुं.** (तत्.) सर्वाधिपति होने का भाव।

**सर्वाध्यक्ष पुं.** (तत्.) सभी का अध्यक्ष, स्वामी।

**सर्वापहरण पुं.** (तत्.) किसी के सर्वस्व का अपहरण, किसी का सब कुछ छीन लेना।

**सर्वापहार पुं.** (तत्.) दे. सर्वापहरण।

**सर्वापेक्षान्याय पुं.** (तत्.) एक न्याय या कहावत, इसका प्रयोग तब होता है जब किसी एक व्यक्ति को कार्यारंभ के लिए अन्य सभी लोगों की प्रतीक्षा करनी पड़े, जब किसी कार्य में सभी अपेक्षित हो।